Dr. Lal PathLabs
Rohini Sector -18, Block E, Rohini, New Delhi-110085
Phone : 011- 30244100, 011-39885050
E-mail : lalpathlabs@lalpathlabs.com; Website: www.lalpathlabs.com

CONSENT FOR HIV TESTING

Lab No:
Date:

Name: Age: Sex:
Address:
Tel.: Mobile:

Consent:

I, the undersigned agree to get my blood tested for HIV Antibodies and provide my identification proof *. The significance and relevant information of this test (Pre Test Counseling) have been provided to me.

Result:

In understand that my result will be kept confidential and authorize the following person / agency to collect my report.

Self ☐ Ref. Doctor ☐ Ref. Agency ☐ Relative ☐

Post Test Counseling will be given by my attending Doctor.

Signature of patient: .....

GENERAL INFORMATION ON HIV

HIV or Human Immunodeficiency Virus is the causative agent of AIDS (Acquired Immune Deficiency Syndrome). There are two forms of HIV Virus.HIV-1 & HIV-2 .However HIV-1 is the predominant agent of HIV infection worldwide. HIV disease is characterized by progressive immunodeficiency associated with qualitative depletion of CD4+ T cells .Advanced HIV disease is referred to as the Acquired Immunodeficiency Syndrome or AIDS.

Modes of transmission

*Sexual contact both homosexual and heterosexual
*Contaminated blood or blood products including contaminated injection and cosmetic equipment.
*Infected mothers to infant's intrapartum, perinatally and breast milk.

Not Transmitted by

*Kissing and hugging
*Holding Hands
*Sharing drinking or eating utensils
*Living in a house with an HIV positive person
*Toilet seats
*Mosquitoes or any other nonhuman organism.

Diagnosis

1. Demonstration of antibodies to HIV

ELISA: HIV antibodies generally appear in the circulation 4-8 weeks after infection Standard test is the ELISA test with sensitivity of over 99.5%.This detects both HIV-1 and HIV -2 at LPL, HIV tests are performed on 2 different kits, before reporting results.

Western Blot: Most commonly used confirmatory test.

2. Direct detection of HIV RNA (Antigen)

Measurement of HIV RNA overt time has been of great value in delineating the relationship between levels of virus and rates of diseases progression, rates of viral replication and the time to develop and antiviral drug resistance. Measurements should be made at approximately every 6 months and frequently in a setting of changes of antiretroviral therapy. A level of >20,000 copies/ml is an indication for antiretroviral therapy.

HIV PCR: Gold Standard for diagnosis of HIV infection in at-risk neonates. It is positive in 98% of patients detecting down to 40 copies/ml of HIV RNA. The only test that can diagnose the HIV infection in Window Period.

Window Period

This is the period form the time of initial infection to the production of HIV antibodies in the blood. It is known as seroconversion and varies from 3-12 weeks .The gap between infection and seroconversion is termed as the window period. During this time the infectious virus is present in the body although the results form the antibody will be negative. Hence a retest 6 months later is recommended.

Monitoring of Therapy

CD4 & CD8 T cell percent and absolute counts: Correlate with disease progression, a fall in CD4 and a rise in CD8 counts occur during the course of the disease.

HIV bDNA: Quantitation of the virus is another valuable method for monitoring disease progression and therapy. This test detects down to 50 copies/ml of HIV RNA.

Incubation Period

A person may carry the HIV virus for a span of 10 years before progression to full blown AIDS. During this period the person shows no signs and symptoms of the underlying disease but is capable of transmitting infection.

**** In newborn/ children identification card of either parent is mandatory***
****In adoption cases proof from orphanage/ agency is mandatory***

Dr. Lal PathLabs
Rohini Sector -18, Block E, Rohini, New Delhi-110085
Phone : 011- 30244100, 011-39885050
E-mail : lalpathlabs@lalpathlabs.com; Website: www.lalpathlabs.com

एच आई वी HIV परीक्षण के लिए सहमति

लैब क्रमांक :
दिनांक :

नाम **आयु :** **लिंग :**
पता
टेलिफोन नः **मोबाईल नः**

सहमति

मैं, अधोहस्ताक्षरी, अपने खून में एच आई वी एंटीबॉडी के परिक्षण के लिए और अपना पहचानपत्र* देने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता ।
मुझे इस परीक्षण से सम्बन्धित जानकारी एवं इसका महत्व (परीक्षण पूर्व काउन्सलिंग) बता दिया गया है।

परिणाम

मैं समझता हूँ कि मेरा परीणाम गोपनीय रखा जाएगाा और मैं निम्न व्यक्ति अथवा एजेंसी को मेरी रिपोर्ट एकत्र करने के लिए अधिकृत करता हूँ।

स्वयं ☐ **परामर्ष चिकित्सक** ☐ **परामर्ष एजेंसी** ☐ **रिश्तेदार** ☐

परीक्षण पश्चात काउन्सलिंग मेरे चिकित्सक करेंगे।

मरीज के हस्ताक्षर .....

एच आई वी पर सामान्य जानकारी

एच आई वी के वायरस से एड्स होता है।

एड्स का मतलब है वह बिमारी के शरीर में प्रतिरक्षा कम करके लक्षण देती है। एच आई वी का मतलब है मानव प्रतिरक्षा को कम करने वाला जीवाणु । एच आई वी वायरस के दो प्रकार होते हैं । एच आई वी एवं एच आई वी 2 पूरे विष्व में एच आई वी 1 एच आई वी के संक्रमण का प्रमुख कारण है। एच आई वी रोग में शरीर की प्रतिरक्षा एवं सी डी 4 (+) टी सैल्स (CD4 Positive T cells) कम होते जाते हैं। एच आई वी रोग की बढी हुई अवस्था को एड्स अक्वायर्ड (Acquired) इमुनो (Immuno) डेफिसिएंसी (Deficiency) सिड्रोंम (Syndrome) कहते है।

संक्रमण के प्रकार (अधिकाशं लोगों को निम्न प्रकार से एड्स मिलता है) :

- ✓ सक्रंमित व्यक्ति से असुरक्षित यौन सम्बन्ध से या सेक्स से समलैंगिकता एवं विषमलैगिक
- ✓ सक्रंमित खून प्राप्त करने से, सक्रंमित व्यक्ति के सुई लेने एवं सक्रंमित सौंदर्य उपकरणों से।
- ✓ सक्रंमित माँ के बच्चे को एवं सक्रंमित माँ के दूध से

इनसे संक्रमण नहीं फैलता हैः

- ✓ गाल पर चुम्बन लने एवं गले मिलने से।
- ✓ हाथ पकडने से
- ✓ खाने व पीने के बर्तनों की साझेदारी से
- ✓ एच आई वी व्यक्ति के घर में रहने से
- ✓ शौचालय की सीट से
- ✓ मच्छर, बंदर और अन्य कोई जीव जो मनुष्य न हो।

जाँच (परीक्षण)

एच आई वी एंटीबॉडी का प्रमाण

एलआईजा : आमतौर पर संक्रमण के 4–8 सप्ताह बाद एचआईवी एंटीबॉडी परीसंचरण में प्रकट होते हैं। एलआईजा एक प्रमाणिक परीक्षण है जिसकी सूक्ष्मग्रहिता 99.5% से अधिक है। यह एचआईवी 1 एवं एचआईवी 2 दोनो का पता लगता है। एलपीएल में एचआईवी परीक्षण पाजीटिव आने पर परिणाम बताने पूर्व दो भिन्न किट्स से दोबारा परीक्षण किया जाता है।

वैष्टर्न ब्लाट : सामान्यतः यह परीक्षण पूर्ण रूप से निश्चित करने के लिए किया जाता है।

1. एचआईवी आर एन ए (एटींजन) की सीधी जाँच रोग की प्रगति एवं वायरस के लेवल के सम्बन्ध, प्रतिरोधक क्षमता एवं वायरस की प्रगति के बीच के सम्बन्ध एवं एंटीवायरल औषधि के प्रतिरोध बनने का समय को समझने के लिए एचआईवी आर एन ए की माप बहुत महत्व रखती है। इसकी माप छह महीने के अंतराल पर कराना चाहिए, उपचार परिवर्तन की अवस्था में और भी कम अंतराल पर कराई जानी चाहिए।
2. यह नवजात शिशु में एच आई वी सक्रंमण पता करने का स्वर्ण मानक है। यह परिक्षण 98% मरीजों में 40 **copies /mL** को खोज लेता है। यह अकेला परिक्षण है जो एच आई वी को विंडो पीरियड में परीक्षण करता है।

विन्डो पीरियड (Window Period)

संक्रमण होने से एंटीबॉडी बनने के बीच के समय को विनडो पीरियड कहते है। इसे सीरोकर्न्वजन (Seroconversion) कहते है। इसमे तीन से बारह सप्ताह लगते है। संक्रमण और सीरोकन्वर्जन के बीच के समय को विनडो पीरियड कहते है। इस समय अतंराल में सवंमित वायरस शरीर में होता है। लेकिन एंटिबॉडी टेस्ट का परिणाम नेगेटिव आता है। इसलिए छः महिने बाद पुनः परिक्षण कराने का परामर्ष दिया जाता है।

उपचार को निगरानी

सी डी 4 एवं सी डी 8 T cell एवं निरपेक्ष सख्या : यह रोग बढने से परस्पर सम्बन्ध रखती है, रोग बढने पर सी डी 4 कांउट कम एवं सी डी 8 काउंट बढती है।

एच आई वी डी एन ए (HIV DNA)5: रोग के बढने एवं उपचार की निगरानी का वायरस की गिनती करवाना दूसरा महत्वपूर्ण तरीका है।

यह परिक्षण 50 **copies / mL** तक को खोज लेता है।

ऊष्मायन अवधि (Incubation Period)

एच आई वी वायरस संक्रमण से पूरी तरह से एड्स होने में 10 वर्ष तक का समय लग सकता है। इस समय में मरीज को कोई भी लक्षण या संकेत नंही दिखाई देता लेकिन वह दूसरे व्यक्तियों को संक्रमित कर सकता है।

***नवजात शिशु एवं बच्चों की स्थिति में माता या पिता का पहचानपत्र अनिवार्य है।**

***गोद लेने की स्थिति में अनाथालय/संस्था से प्रमाणपत्र अनिवार्य है।**